दूतकाव्य परम्परा में 'पत्रदूतम्' की विशेषता

डॉ. उषा नागर

व्याख्याता संस्कृत
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर

शोध सारांश

दूतकाव्यों की परम्परा में वर्तमानकाल के संस्कृत साहित्य सर्जना में कवि पं. श्रीमोहनलाल पाण्डेय ने काव्य की ऐतिहासिक कथावस्तु के आधार पर 'पत्रदूतम्' में खाड़ीयुद्ध का वर्णन किया है। इसमें नायक सद्दाम हुसैन स्वयं शक्तिस्वरूपा अपनी प्रेयसी को निरन्तर स्मरण करता है। आलेख में कवि के प्रत्येक पद्य में प्रगाढ़बन्ध की शक्ति का साक्षात् प्रदर्शन साररूप में वर्णित है । आलेख में संक्षेप में रसों और अधिकांश छन्दों एवं अन्य विषय को साररूप में समाहित किया है।

मुख्य शब्द – वेदान्तदेशिक, समरांगण, खात् मैरेयम्, जलमुचो, शिखिनो, प्रोद्धृतं, टोही, डिम्भा, वाहवृन्दं, तार्तीयीके, जायामाया, शूराब्जवक्त्र, दातदैतेयदर्पा, दुर्भरां, प्रत्यादेशनीया, व्याधवारा, मेमीयन्ते ।

दूतकाव्य परम्परा –

दूतकाव्य–परम्परा का अति प्राचीन इतिहास रहा है। यह एक ऐसा आत्मकथापरक विधा है, जिसके लिए माध्यम का चयन किया जाता है। प्रत्यक्ष कथन की अपेक्षा परोक्ष कथन की मुक्त अभिव्यक्ति की सफल विधा है। इस परम्परा में **मेघदूत, पवनदूत** आदि अनेक खण्डकाव्य प्रसिद्ध हैं।

वस्तुतः दूतकाव्य या सन्देश काव्य द्वितीय कोटि के अनुकरण में ही आता है। 'मेघदूतसमस्यालेख' में संयोगवश दोनों कोटियाँ (समस्यापूर्ति तथा सन्देश–प्रेषण) आयी हैं। जम्बूकवि का 'चन्द्रदूत' प्राचीनतम दूतकाव्य है (949 ई.) जिसमें प्रिय के पास विरहिणी द्वारा सन्देश भेजा गया है। धोयी कवि का 'पवनदूत' प्रसिद्ध है जिसमें दक्षिण देश में रहने वाली प्रेमिका बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन के पास प्रेम–सन्देश भेजती है। एक जैनकवि वादिचन्द्र सूरि ने भी 17वीं शताब्दी ई. में **'पवनदूत'** की रचना की है।

दूतकाव्यों में प्रेम–सन्देश के अतिरिक्त धार्मिक नियमों. तात्त्विक सिद्धान्तों तथा भक्तिभावना का भी प्रतिपादन हुआ है। इस प्रकार दूतकाव्यों का विषय सीमित नहीं रहा। कृष्णभक्त सन्तों ने कई दूतकाव्य लिखे तो रामभक्त वेदान्तदेशिक (1250–1350 ई.) ने 'हंससन्देश' लिखा जिसमें राम के द्वारा सीता के पास सन्देश भेजने का वर्णन है। यह आध्यात्मिक रचना भी मन्दाक्रान्ता छन्द में दो आश्वासों में निबद्ध है।

अन्य दूतकाव्यों में **इन्दुदूत** (जिनविजयगणि–कृत, 1650 ई.), **उद्धवदूत** (माधवशर्मकृत), उद्धवसन्देश (रूपगोस्वामिकृत, 16वीं शताब्दी ई..), **कोकिलसन्देश** (नृसिंह, वेंकटाचार्य तथा उद्दण्डकृत पृथक–पृथक् काव्य), **चातकसन्देश** (141 पद्य), **जैनमेघदूत** (मेरुतुंगकृत, 15वीं शताब्दी ई.), **नेमिदूत** (विक्रमकविकृत, समस्यापूर्ति), **पदांकदूत** (कृष्णसार्वभौम, गोपी–कृष्ण–वार्ता, 1645 वि.सं.), **पिकदूत** (शार्दूलविक्रीड़ित छन्द में 31 पद्य, गोपियों द्वारा कृष्ण को सन्देश भेजना), **भृङ्गदूत** (गंगानन्दकृत 16वीं शताब्दी ई.), **भ्रमरदूत** (रुद्रकृत), **मनोदूत** (चौतन्यसम्बन्धी विष्णुदासकृत), **शीलदूत** (जैनकवि चरित्रसुन्दरमणिकृत), **शुकदूत** (लक्ष्मीदास), **हंसदूत**

(रूपगोस्वामिकृत)। इस प्रकार 50 से अधिक दूतकाव्य मेघदूत की लोकप्रियता के साथ–साथ पं. मोहनलाल पाण्डेयकृत पत्रदूतम् भी एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक दूतकाव्य की श्रेणी में कवि परम्परा में पठनीय है।

नायक का चरित्र चित्रण

नाट्यशास्त्र के अनुसार नायक के तीन प्रकार (उत्तम, मध्यम, अधम) हैं। नायक की चार अवस्थायें (दक्षिण, धष्ठ, शठ अनुकूल) हैं। नायक का प्रमुख कार्य काव्य की विषयवस्तु को अग्रसारित करने का है। पत्रदूतम् (सन्देशकाव्य) का नायक अमेरिकन वायुसेनाध्यक्ष है, जो अपनी प्रियतमा (नायिका) को न व्यवहार से सन्देशों का आदान–प्रदान करता है। वह उत्साही, सफलप्रेमी, कर्त्तव्यपालक, देशभक्त, विनीत, आज्ञाकारी, वीर नायक. आदर्श पति, विरही कामुक तथा मित्रराष्ट्रों की सेना का प्रमुख वायु सेनाध्यक्ष है। इस काव्य में अनुकूल नायक के रूप में। उसने अपनी प्रियतमा का निरन्तर स्मरण किया। वह माता–पिता की आज्ञा पाकर अपनी प्रियतमा का साक्षात्कार कर कर्त्तव्यपालन । हेतु समराङ्गण में प्रवेश करता है –

साहस्रादिप्रधानोरसिकभटपतियोमयानैर्विशालैः
प्रायान्यूयार्क–देशादयनमनुसरन् मानचित्रानुसारम् ।
पैट्रोलं पूरयित्वा विपुलतमपुटे वर्त्मविश्रामकेन्द्रे
खात् पश्यन् भूमिदृश्यन्नयनहरमसौ प्राप खाड़ीप्रदेशम् ।।
आयाता बान्धवास्ते समधुरपिशितं व्यञ्जनं भुक्तवन्तो
मैरेयं योजयन्तो निजनिजचषकान् पीतवन्तो मिथस्ते।
इष्टाभिः कामिनीभिर्विविधरवयुता नृत्यवन्तश्च साकं
शत्रूजेतुञ्च मह्यं शुभवचनमयीमाशिषं दत्तवन्तः।।

नायिका का चरित्रचित्रण

नायक के समान नायिका का विशेष महत्त्व होता है। पत्रदूतम् में नायिका को नवोढ़ा, नताङ्गी, तन्वङ्गी, रुद्धबाष्पा, विद्धचित्ता आदि गुणों से अलंकृत किया है। वह नव–विवाहिता, कृशोदरी, श्लथ–अंगों से युक्त, कामिनी, कमलनयनी, गृहिणी, सुन्दरी, धर्मपरायणा आदर्श रमणी है। नायक ने नायिका के लिए सुभगे, शुभे, कल्याणि, कान्ते, डार्लिङ्ग शब्दों का प्रयोग किया है। उसका कामिनी रूप कामदेव के बाण से आहत कमनीय नेत्रों से युक्त है। वह नायक को पत्र के साथ यादगार के रूप में जाँघिया (चड्डी) भेजती है।

वह कोमल कमल सी कान्तिमती युवाप्रिया अपने प्रिय से अनेक बार चुम्बित की थी। वह देदीप्यमान रत्नजड़ित आभूषण धारण करके, सुन्दर वस्त्रों से सज धज कर सुगन्धित कुसुमों से गंधायित शयन कक्ष के पलंग पर नायक का इन्तजार कर रही है।

अमेरिका का वायु सेनाध्यक्ष राष्ट्रपति की आज्ञा से युद्ध के लिये प्रस्थान करना चाहता है। प्रस्थान से पूर्व वह अपने माता–पिता से आज्ञा प्राप्त करता है, तदनन्तर प्राणप्रिया से साक्षात्कार कर कर्तव्यपालन हेतु समराङ्गण में जाने हुते विदाई चाहता है। उस समय प्राणवल्लभा कहती है –

श्रुत्वा तां कान्तवाचं विरहदमनसा दह्यमाना नवोढा
तन्वङ्गी रुद्धवाष्पा क्ष्णुतमदनशरैर्विद्धचित्ता नताङ्गी।

प्रावोचत् सन्नकण्ठं रणभुवि भवता गन्तुकामा सहैव
नो प्रत्यादेशनीया गुरुतरविरहा कामिभि व सह्या।।
स्त्रीणां संख्ये प्रयाणं सरसिजनयने! सर्वकारेण रुद्धं
याभिः प्राप्ता प्रशिक्षा समरविषयिणी गम्यते तत्र ताभिः ।
सेवार्थ तिष्ठ पित्रोस्त्वमसि सुगृहिणी गेहकार्ये प्रदक्षा
त्वन्निघ्नं दासवृन्दं प्रचुरमपि धनञ्जीवनं मे च भव्यम् ।।

समुद्री मार्गवर्णन

नायक अपनी नायिका को पत्र में सन्देश के माध्यम से समुद्री मार्ग का यात्रा विवरण प्रेषित करते हुए समुद्री जलजीवों के चित्रण में मदलियों की उपजातियों के नाम प्रस्तुत किये हैं। मछुआरें समुद्रतट पर मछलियों को जाल में फँसा कर टोकरों में भर कर विदेश में निर्यात करते हैं।

अब्धेर्भीताः सरिद्भिस्तदपहृतधनं प्रापयन्तः प्रियाभि–
स्तोयादानप्रदानात् पुनरपि मुदिराः सिन्धुबन्धुत्वमापुः।
केकाभिः स्वागतं ये विदधति शिखिनो दत्तलास्योपहारा–
स्तेभ्यो हर्ष सवर्ष ददति जलमुचो बन्धवश्चातकानाम्।।
राजीवान् रोहितान् मुद्गुरशकुलतिमीन् शालपाठीननकानाम्।।
शृङ्गीशिल्पादियुक्तान् परमरसमयान् केलिलग्नान् विशालान्
दृष्ट्वा तुष्यं विहङ्गानिव सलिलचरान् व्योम्नि नीले समुद्रे ।।

युद्ध में कुवैत की जनता –

महासमर में कन्यायें पितारहित, स्त्रियाँ पतिविहीन तथा माताएँ पुत्रविहीन हो गईं। इराकी सैनिकों ने जनता पर बर्बरतापूर्वक अमानवीय अत्याचार किये। उन्होनें शिशुसमूह की हत्या, सम्पदा की लूटपाट तथा युवतियों का चीर–हरण किया।

राष्ट्राध्यक्षस्ततस्त्यो विपुलवसुपतिर्देशविस्तारकामो
लोभेनाकृष्टचेता प्रमुखरणगतिर्नीतिकार्यातिवामः ।
सामर्थयेनाभ्यमिर्यो विहितरिपुनतिर्वस्त्रभूषाभिरामः
श्री सद्दामो "हुसैनो विविधविधिमतिर्भासते द्विड्विरामः।।

सद्दामहुसैन का चरित्र–चित्रण –

ईराक के अधिनायकवादी राष्ट्राध्यक्ष सद्दाम हुसैन ने राज्य–विस्तारवादी नीति से युद्ध में बर्बरतापूर्वक कुवैत की दौलत को हड़पने का प्रयास किया। वह धनी, परधन के लोभ से आकृष्ट चित्त वाला, युद्धकौशल में दक्ष, नीतिवान, शत्रुञ्जय, शत्रुओं को झुकाने वाला, प्रतिभावान्, विख्यात शासक था। ईराकी सैनिको न युद्ध में उसके आदेश से कुवैत की जनता पर अमानवीय अत्याचार किये । उसने शांतिविषयक विश्वसमुदाय संस्था की एक भी नहीं सुनी। वह आंतकी, निर्दयी, कठोर हृदय, प्रकृति–विनाशक अंहकारी, निरकंश शासक था। वह अनीतिपूर्वक हठधर्मिता से। कुवैत पर युद्ध करके अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता था। **(अ) रस–विश्लेषण**

काव्य का आस्वादपरक तत्त्व रस है। आस्वाद्य होने के कारण रस सहृदयसंवेद्य है। रसानभति आनन्द क अभिव्यक्त होती है।

सन्दशकाव्य पत्रदतम में रस का आस्वाद्य स्वरूप स्पष्ट रूप से परिलक्षि होता है। इस काव्य में रसाभिव्यक्ति, द्रवशालता, रसास्वादन, आनन्द की अनुभूति प्रत्येक पद में विषद् रूप में प्रयोग की गयी है। इसमें शब्दों के व्यत्पन्न रूप का चयन करके रसनिर्वाह हेतु काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त का सहजता से अनुप्रयोग किया गया है। काव्य के सामान्य तत्त्वों में विद्यमान आस्वाद्य रस की चरम परिणति को विलक्षण प्रतिभा से प्रकट । इस काव्य में मधु कोष घनीभूत रसधारा का सतत प्रवाह प्रवाहित हुआ है। इसमें परिस्थितियों के अनुसार अनुभूतियाँ को प्रकट किया गया है। इस काव्य में स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव एवं से भाव सञ्चारी भाव के साथ रसनिष्पत्ति रसास्वाद को स्फुटित करती है।

श्रृङ्गाररस

इस काव्य में नायक–नायिका के अङ्गों की चेष्टाओं, हावभाव. चुम्बन, विरह, मिलन, कामवासना, वियोग की भावाभिव्यक्ति को काव्यरूप प्रदान किया गया है। संयोगश्रृङ्गार के प्रयोग से नायक तथा नायिका की शारीरिक एवं मानसिक निकटता से रति या प्रेमभाव प्रकट होता है। इस काव्य में विप्रलम्भश्रृङ्गार से नायक और नायिका की विरहावस्था का हृदयग्राही एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है, जिसमें पूर्वानुराग, प्रवास एवं विरह का यथासाध्य प्रयोग हुआ है।

शान्तरस

सञ्चारी भाव के रूप में अमेरिकन राष्ट्रपति जार्ज बुश ने आपरेशन डेजल्ट शील्ड से 6 अगस्त 1990 को मित्र राष्ट्रों की ओर से प्रतिरक्षात्मक कदम उठाया। दैन्यभाव से युद्ध में प्रताड़ित बच्चे, स्त्रियाँ, मनुष्यों आदि का वर्णन हृदयविदारक है। दयाभाव से मित्र राष्ट्रों की सेना ने कुवैत की जनता की रक्षा के लिए ईराक पर आक्रमण करके विजय प्राप्त की।

करुण रस

यहाँ आलम्बन भाव के रूप में इराक के राष्ट्राध्यक्ष सद्दाम हुसैन के सैनिकों द्वारा कुवैत पर आक्रमण, उसकी अधिनायकवादी एवं विस्तारवादी प्रवृत्ति से कुवैत पर कब्जा करने की भावना को प्रकट किया गया है। उद्दीपनविभाव के रूप में कुवैत के नागरिकों के अङ्ग–भङ्ग, उनके अण्डकोष काट दिये, है युवतियों के स्तन काट दिये, सत्तीत्व भंग कर दिया, बलात्कार किया गया, बच्चे, बूढ़ों को जला दिया, धन लूटना, बन्दी बनाना, पशु पक्षियों की सम्पदा को नष्ट करना, प्रकृति को प्रदूषित करना आदि दुष्कृत्य चित्रित हुए हैं। अनुभाव के रूप में कुवैत की जनता की चिल्लाहट, अमानवीय, यातनाओं से आहत समुदाय का चित्रण कर सद्दाम की दुष्टता को प्रदर्शित किया गया है। सञ्चारीभाव के रूप में अमेरिकन राष्ट्रपति जार्ज बुश ने मित्र राष्ट्रों के सहयोग से मानवता की रक्षा के लिए समूचे विश्व का आह्वान कर सद्दाम हुसैन के आंतक को जड़ से मिटाने का संकल्प लिया है :–

अत्याचारा असंख्या बहुविधभयदा घोरबाधाः कृतास्तै–
र्नासा ग्रीवाश्च भिन्ना युवनरवृषणाः स्फोटितास्तीक्ष्णशस्त्रैः।
सद्यो जाता हि डिम्भा गदहरणपदे मारिता अङ्ग भङ्ग
स्त्रीणां भग्नं सतीत्वं यवजनरुधिरं प्रोद्धतं नालयन्त्रैः ।।

रौद्ररस

आलम्बन भाव के रूप में जार्जबुश के आदेश से मित्र राष्ट्रों की सेना ने सद्दाम हसैन के निरकुंश शासन के अन्त का प्रण लिया। उद्दीपन विभाव के रूप में अमेरिकन वायु सेनाध्यक्ष ने कुशल रणनीति से मित्र राष्ट्रों की सेना का संचालन कर ईराक की सेना पर आक्रमण करने का कार्य किया है। अनुभाव के रूप में जैविक, रासायनिक, पारमाण्विक बम, राडार, राकेट, बुल्डोजर, नवीन यंत्र, टोही विमान, बफ विमान, पेटियाट, स्कड प्रक्षेपास्त्रों से युद्ध के भावी परिणाम को दर्शाया गया है। सञ्चारीभाव के रूप में सद्दाम हुसैन के आंतक से कुवैत की जनता को मुक्त कराने के प्रयासों का वर्णन उपनिबद्ध हुआ है –

निर्दोषाणां सहस्रं युगलपरिमितं हिंसित गूढपुम्भि–
श्चौकं लक्ष नराणां तपनसुतनिभैः प्रापितं संदितत्वम् ।
गोत्रानन्ताप्रगुण्यं दशशतकमरं स्थापितं बन्दिगेहे
मूर्धानो मारितानां निजपुरि चरतां लम्बितास्तद्गृहेषु ।।
क्रूरैः सद्दामसैन्यैर्विविधवसुचयो लुण्ठितो नागराणां
वित्तागाराच्च मुद्राः परमपरिमिता यापिताः स्वीयदेशे।
नीतं धान्यं प्रभूतं द्रुततरगमनं वाहवृन्दं महार्ह
दूरश्रव्यप्रयन्त्रं विपुलरुचिकरं सारणं दूरदृष्टेः ।

वीररस

आलम्बन भाव के रूप में जार्जबुश के आदेश से अमेरिकन वायु सेनाध्यक्ष द्वारा मातृभूमि की रक्षा के लिए उत्साही मन को चित्रित किया गया है। उद्दीपन विभाव के रूप में बफ विमान, कलस्टर बम, राकेट, राडार आदि से इराक पर जवाबी हमले का चित्रण प्रस्तुत किया है। अनुभाव के रूप में युद्ध–विभीषिका से जन–धन की हानि, प्रकृति का कलुषित एवं प्रदूषित होना, पशु–पक्षियों का मरना, महामारियों का उद्भव एवं जल प्रदूषण आदि को प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार सञ्चारीभाव के रूप में सद्दाम हुसैन के निरकुंश शासन के अन्त को प्रदर्शित किया गया है।

बीभत्सरस

युद्धविभीषिका में जन–धन की हानि, तेल के कुओं में आग से भय का वातावरण है। युद्धभूमि आलम्बन विभाव है। पशुपक्षियों की मृतयोद्धाओं के प्रति दुष्चेष्टाओं का प्रदर्शन उद्दीपन विभा के रूप में वर्णित हुआ है। युद्धभूमि में –

छागा गृध्राः कपोताः पिकबकचटकाः सारसाः कृष्णसाराः
कोकाः कोला मयूरा मृगशशगवया वर्तकाः कुक्कुटाश्च ।
चाषा लावाश्चकोराः शुककुररगणाः पक्षिशालास्थिता ये
तेषां बुक्का प्रमिष्टा परमरसमयी भक्षिता सैन्यरकैः ।।

भयानकरस

आलम्बन भाव के रूप में भयानक दृश्य, निर्जन, युद्ध की भयावहता, आंतक, डर, खामोशी एवं सैनिकों के अमानवीय कृत्यों को प्रकट किया गया है। उद्दीपन विभाव के रूप में इराकी सैनिकों के अपशब्द, स्त्रियों के कौमार्य को भङ्ग करना, तेल के कुओं में – आग लगाना आदि वर्णित हुआ है। अनुभावरूप में जनमानस

का मरण, गति, मोक्ष, त्रास, पशु–पक्षियों को पकाकर खाना आदि चित्रित किया गया है। सञ्चारी या व्यभिचारी भाव के रूप में (कुवैत के बच्चे, स्त्रियाँ, बूढ़े लोगों का विलाप, चीखें, दर्दनाक स्थिति, भयानक दृश्यों का चित्रण दर्शनीय है जिसमें ग्लानि शंका र त्रास आदि भाव स्पष्ट प्रतीत होते हैं।

स्त्रीभिः साकं हठत्वं, शिशुगणहननं लुण्ठनं नागराणां
स्वेच्छाचारित्वमेषां नयविधिरहितं ताडनं बर्बराणाम् ।
ऐराकाणां कुवैतं प्रति विकृतियुतं यन्त्रणं सैनिकानां
संयुक्त राष्ट्रसङ्घ प्रतिनिधिपुरुषैर्धिक्कृतं कृत्यमेतत् ।।

(आ) प्रकृति चित्रण

इस काव्य में प्रकृति के प्रति गम्भीर वर्णनानुराग के साथ प्रकृति की मनोरम छटा को काव्यरूप में निरूपित है। प्रकृति विषयक अनन्य, अदृश्य, अकल्पनीय भावों को काव्य में जीवन्त रूप से उपस्थापित किया है। इसमें प्रकृति के प्रति काव्याभिव्यक्ति से परिवेश एवं जीवन के विविध आयामों की सार्थकता को भी सिद्ध किया गया है। कुवैत के समुद्र से भयभीत रमणीय सरिताएँ जल का आदान–प्रदान करके समुद्र एवं मेघ आपस में मित्रता कर व रहे हैं। मयूर मधुर ध्वनियों से स्वागत गाना गा रहे हैं। बादल और चातक जलधाराओं का आस्वादन कर मित्रता कर रहे हैं। इस 3 समुद्र की अथाह जलराशि में विद्यमान जलचर, मछलियों की प्रजातियाँ केंकड़े, मगरमच्छ, कछुआ, घड़ियाल आदि को जल में विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाएँ करते हुए वर्णित किया है जिसका 3 वृत्तान्त पत्र के माध्यम से अमेरिकन वायु सेनाध्यक्ष ने अपनी नायिका को प्रेषित किया था।

(इ) भाषा शैली

पत्रदूतम् में कवि प्रतिभा एवं कवि कल्पना से मोद मधुर १ प्रसाद गुण को प्रस्तुत किया गया है। काव्य में युद्ध वर्णन के सन्दर्भ में ओज गुण का स्वभाविक समावेश हुआ है। नायक तथा नायिका के सन्देशों में श्रृङ्गार रसमय माधुर्य गुण का प्रयोग हुआ श् है। कवि का अभिनव शब्दों के प्रयोग के प्रति मोह रहा है। इसी श् प्रकार अनुप्रास का अलंकार सर्वत्र प्रयोग हुआ है तथा इसके साथ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अर्थान्तरन्यास अलंकारों का भी सफल प्रयोग देखा जा सकता है। काव्य के सम्पूर्ण पद्यों में स्रग्धरा छन्द का प्रयोग किया गया है।

इसमें काव्यध्वनि, काव्यशक्ति, छन्दमय प्रकृति से रू शब्दचयन, नवीन संज्ञाओं, शस्त्रों, स्थानों का औचित्यपूर्ण दे सन्निवेश किया गया है। कवि का संस्कृतभाषा पर पूर्णतः अधिकार द है। काव्य में छन्दप्रयोग में कुशलता एवं पदविन्यास में अपूर्वता त प्रतीत होती है। यह अभिनव कृति समसामयिक खाड़ीयुद्ध के श्र विषय पर आधारित है, जिसमें सैन्यविज्ञान के नवीनतम भाषागत शब्दों (राकेट, राडार, बम), नवीनतम यंत्रों (बुल्डोजर) एवं उपकरणों के वाचकशब्दों का संस्कृतीकरण करते हुए भाषिक क आयामों को नवीनतम रूप प्रदान किया गया है।

(ई) छन्दयोजना

छन्द वेद का पर्याय भी है तथा वेद के चरण के रूप में स्वीकार किया गया है। छन्द शब्द छदि धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है – आच्छादन करना, ढकना, प्रसन्न करना, बाँधना आदि काव्य में छन्द के प्रयोग से अभिव्यक्ति में प्रवाहमयता एवं लयात्मकता का संचार होता है।

कवि ने पत्रदूतकाव्य में छन्दयोजना का सुगठित रूप से प्रयोग किया है। काव्य के मङ्गलाचरण के प्रारम्भिक छह पद्यों में देवाराधन तथा यज्ञ देवताओं की स्तुति के लिए स्रग्धरा छन्द का प्रयोग किया है तथा समस्त काव्य की सुदीर्घ स्रग्धरा छन्द में रचना कर शास्त्र विहित रचना प्रक्रिया से काव्य पर अधिकार एवं प्रबन्ध को प्रमाणित किया है।

(ए) अलङ्कार विमर्श

अलंकार काव्य का प्राणभूत तत्त्व है, जिससे वाक्य को सजाकर काव्यसौन्दर्य से पद्यों को सुसज्जित किया जाता है। कवि ने पत्रदूतम् खण्डकाव्य में अनेक अलंकारों का प्रयोग किया है–

अनुप्रास अलङ्कार

यह शब्दालंकार है, जिसमें स्वरों की विषमता होने पर शब्दों में साम्यता का भाव प्रकट होता है। 'वर्णसाम्यमनुप्रासः । अथवा **'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् ।**

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार – **'रसाद्यनुगतत्वेन प्रकर्षेण न्यासोऽनुप्रासः।'**

'पत्रदूतम् में अनुप्रास का उदाहरण निम्नानुसार द्रष्टव्य है –

श्रौतीशिक्षास्वरूपा, सरसिजजसुता सामसङ्गीतसक्ता,
शान्तस्वान्ता सुरम्या सितसरसिरुहे संस्थिता सर्वशुक्ला।
स्तुत्या स्तोमैः सुराणां सदसि सहचरैः सेवकैः साध्यसण्धैः,
शुद्धा शीतांशुसौम्या सुखयतु सरसा शारदा शास्त्रसारा।।

श्लेष अलङ्कार

यह शब्दालंकार है जिसमें एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। 'श्लिष्टरू पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।' आचार्य विश्वनाथ ने श्लेष अलंकार के छः भेद माने हैं। 'पत्रदूतम् में श्लेष अलंकार का उदाहरण निम्न प्रकार द्रष्टव्य है –

देवानां दैत्यवृन्दैर्विमलमतिजुषां प्राग्युगे घोरशस्त्रै
वैतीयीके युगेऽभून्निशिचरपतिना रामचन्द्रस्य जन्म।
तार्तीयीके युगेऽथो कुरुपतितनयैर्भारते पाण्डवानां ।
श्रीसद्मास्य घोरं सह समरमभून्मित्रराष्ट्रैस्तुरीये ।।

उपमा अलंकार

इसमें एक वस्तु अथवा प्राणी की तुलना अत्यन्त सादृश्य के कारण समान या प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु से की जाती है। **'परस्फुटं सुन्दरं साम्यमुपमा अभिधीयते ।'** अथवा **'भिन्नयोः पदार्थयोः साधर्मस्य उपमानोपमेयभावेन वर्णनम्** उपमा कथ्यते।

'पत्रदूतम्' में उपमालंकार –

जायामाया त्रियामाततातिमिरततिः क्षिप्यते येन दूरं
यस्मिन् शराब्जवक्त्रं विकसति सततं मित्रपादैः प्रदीप्तैः।
यत सर्वस्वापहारि त्रिगुणमणिचयालोकसंहारकारि

शौर्योत्कर्ष भटानां जगति विजयते तद्धि जन्यं सुधन्यम् ।।

रूपक अलंकार

जहाँ पद की समानता होने पर उपमेय में उपमान का अभेद आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है। **'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययो।' अथवा 'रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे ।'**

'पत्रदूतम् में रूपक अलंकार :–

दन्तिद्वेष्योऽवदेहा दनुजदवदवा दाडिमीदन्तदीप्ति
देवेभ्यो दानदात्री दितदितिजदला दुःखदारिर्चदात्री।
दैवज्ञा दिव्यदर्शा दिशि दिशि दरदा दुर्गदैत्येन्द्रदात्री
दुर्गा दुर्दम्यदेशा दलयतु दुरितं दातदैतेयदर्पा ।।

'पत्रदूतम् में उत्प्रेक्षा –

श्रुत्वा शिष्टिं बुशस्य प्रखरमतिमतः कामिनीविप्रयोगां
वित्ताढ्यामेरिकाया रणगतिविषयां दुर्भरां तीव्रकष्टाम्।
राष्ट्राध्यक्षस्य कश्चित् पवनबलपतिर्धैर्यधारी प्रतापी
पित्रो कट्यमाप प्रचुरशुभमयीं वाचमानेतुकामः ।।

'पत्रदूतम' में अर्थान्तरन्यास –

श्रुत्वा तां कान्तवाचं विरहदमुनसा दह्यमाना नवोढा
तन्वङ्गी रुद्धवाष्पा क्षणुतमदनशरैर्विद्धचित्ता नताङ्गी।
प्रावोचत् सन्नकण्ठं रणभुवि भवता गन्तुकामा सहैव
नो प्रत्यादेशनीया, गुरुतरविरहा कामिभि व सह्या।।

'पत्रदूतम् में निदर्शना –

वन्यायां व्याधवारा मृगपतिमृगणां कुर्वते कृत्तिहेतो–
र्वन्यानां वारणानां विदधति हननं दन्तरत्नोपलब्ध्यैः ।
ममीयन्ते कुरङ्गानजिनमृगमदप्राप्तये जीविकार्थ
हन्तु सद्दामसैन्यान् वयमपि च गतास्तैललाभाय तद्वत् ।।

(ऐ) सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवनमूल्य

इस काव्य में भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति के समन्वित रूप को काव्याभिव्यक्ति के रूप में प्रकट किया है। कवि अमेरिकन नायक–नायिका के आदर्श गृहस्थजीवन, नारी के कर्तव्य को भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाया है। कवि ने पाश्चात्य संस्कृति से नायक तथा नायिका के मिलन पर चुम्बन देना प्रणय, प्रमोद, समर्पण, आत्मीयता, अटप्रेम का प्रतीक माना है। प्राणप्रिया से साक्षात्कार कर कर्त्तव्यपालन हेतु समराग्गण में प्रस्थान के लिये विदाई चाहता है।

कवि नायक के अरब देश की ओर जाने से पूर्व माता–पिता की आज्ञा प्राप्त करना, पिता के हृदय की आकाश समरूप विशालता, माता के हृदय में त्याग की भावना को अभिलक्षित किया है। वह अमेरिकन माता उसके पुत्र के समराङ्गण में वीरता, शौर्य, बलिदान से राष्ट्रमाता एवं वीरमाता का सौभाग्य प्राप्त करना चाहती है। प्रेयसी ने प्रिय से युद्ध मैदान में साथ चलने का आग्रह किया लेकिन नायक ने नायिका

से सास–ससुर की सेवा के लिए सुगृहिणी बनकर गृहस्थ को सभालने, कर्त्तव्यधर्म निर्वहण करने का कार्य सौंपा। नायक–नायिका का पत्र व्यवहार उनके अगाध प्रेम को बाँधने में सक्षम है।

अन्त में इस 'पत्रदूतम्' खण्डकाव्य की विशेषता में इस आलेख में यह कहना उचित रहेगा कि कवि की दृष्टि संसार में सुख समृद्धि बनी रहे। काव्य का नायक एवं नायिका ईसा मसीह के आगे विनम्रता से सिर झुका कर यही प्रार्थना करते हैं कि विश्व में कोई भी राष्ट्र युद्ध का विचार भी न करे, क्योंकि इस प्रकार के युद्धों से भारी जन–धन की हानि होती है। अनेक विकलांग होकर त्रस्त जीवन जीने को विवश होते हैं। युद्ध हमेशा बर्बरता का प्रतीक है। अतः प्रत्येक राष्ट्र को यह चाहिये कि वह युद्ध की कल्पना भी न करे और न विषाक्त एवं पारमाण्विक तथा रासायनिक शस्त्रास्त्रों का संग्रह ही करे । युद्ध असभ्य जंगली एवं क्रूर मानवों की प्रवृत्ति है, सभ्य संसार कभी युद्ध नहीं चाहेगा। ईसा मसीह सभी को ऐसी प्रेरण दे कि किसी भी राष्ट्राध्यक्ष की मानसिकता युद्ध से सम्पृक्त न हो। इस संसार में प्रकृत जीवन–धारा हो, उद्यमदृ जगत् समृद्धि की ओर अग्रसर हो, कृषि समृद्ध हो, अधिक से अधिक उत्पादन बढ़ें ताकि आम आदमी अपने स्तर का जीवन जी सके। विश्वजनीन शान्ति की और मनुजता प्रवृत्त हो।

भारतीय संस्कृति का मूलमन्त्र **"वसुधैव कुटुम्बकम्" "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"** की भावना से विश्वजनीन शान्ति का साम्राज्य स्थिर हो। कवि की ओर से भरत वाक्य के रूप में यही कामना है।

सन्दर्भ :

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' पृ.सं. 342
2. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 20
3. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 18
4. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 18
5. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 15
6. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 24
7. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 25
8. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 30
9. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 29
10. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 40
11. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 36
12. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 42
13. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 43
14. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 2
15. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या–8
16. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या –7
17. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 6
18. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 9
19. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 14
20. पत्रदूतम्, श्लोक संख्या – 28

सहायक ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 1998 ई.
2. पत्रदूतम्, पं. मोहनलाल शर्मा श्पाण्डेयश, पाण्डेय प्रकाशनम्, म.नं. 2381, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर, प्र.सं. 1999 ई.
3. मेघदूतम, गोस्वामी प्रहलाद गिरि, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी, द्वि.सं.1997 ई.
4. मेघदूतम्, डॉ. अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर, 2012 ई.
5. काव्यप्रकाश, आचार्यविश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1998 ई.
6. दशरूपकम, डॉ. रामजी उपाध्याय, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, 2000 ई.
7. संस्कृत साहित्य का वृहद् इतिहास, डॉ. बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ, 2000 ई.
8. साहित्यदर्पणम्, आचार्य शेषराज रेग्मी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2007 ई.